DOI: 10.51220/hjssh.v5i1.7
Himalayan J Soc.Sci. & Humanities Vol- 5 pp.61 - 70, December, 2010, ISSN. 0975 - 9891

अल्मोड़ा जनपद के संसाधन आधार का मूल्यांकन

अनिता रूडोला एवं राजेश भट्ट
भूगोल विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, पौड़ी परिसर

Received: 12-8-2010 **Revised: 17-10-2010** **Accepted:23-11-2010**

ABSTRACT

विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर ही मानव अपना आर्थिक विकास कर सकता है, लेकिन संसाधनों का उपयोग समस्त धरातल पर समान रूप से कभी नहीं किया जाता। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों के प्रयोग में वस्तुगत व मात्रात्मक अन्तर पाया जाता है। प्राकृतिक संसाधन मानव विकास के मूल आधार माने गये हैं। **जीन ब्रून्स** ने **पृथ्वी, जल, मिट्टियां , अधः मिट्टियां या खनिज** तथा **धरातल** इन पाँच तत्वों को मानव विकास का मुख्य आधार माना है। प्राकृतिक संसाधन आधार पर अल्मोड़ा जनपद के विकास का मूल्यांकन किया गया है।

KEYWORDS: Natural sources, Resources, Economic empowerment, Literacy

उत्तराखण्ड राज्य के कुमांऊ मण्डल में स्थित अल्मोड़ा जनपद भौगोलिक दृश्टिकोण से 29° 28′ उत्तरी अक्षांष से 30° 1′ उत्तरी अक्षांष तथा 79° 2′ पूर्वी देशांतर से 80° 3′ पूर्वी देषांतर के मध्य फैला है। जनपद की दक्षिणी–पूर्वी सीमा का सीमांकन चम्पावत, दक्षिणी सीमा का निर्धारण नैनीताल, पूर्वी सीमा का निर्धारण पिथौरांगढ़, उत्तरी सीमा का निर्धारण बागेश्वर तथा चमोली जनपदों द्वारा होता है, जबकि पश्चिमी सीमा का सीमांकन गढ़वाल जनपद द्वारा होता है। इस जनपद की उत्तर–दक्षिण चौड़ाई 46 किमी0 तथा पूर्व–पश्चिम लम्बाई 86 किमी0 है। अल्मोड़ा जनपद 3139 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल पर फैला है। यहाँ तीन तहसील–भिकियासैंण, रानीखेत तथा अल्मोड़ा हैं, जिसमें स्यालदे, सल्ट, भिकियासैण, चौखुटिया, द्वारहाट, ताड़ीखेत, हवालबाग, ताकुला, भैसियाछाना, धौलादेवी तथा लमगड़ा विकास प्रखण्ड एवं अल्मोड़ा, रानीखेत तथा द्वारहाट नगरीय क्षेत्र है। इन विकासखण्डों में 95 न्यायपंचायतें तथा 2236 ग्राम हैं जिसमें 88 ग्राम गैर–आबाद हैं।

भू–आकृतिक स्वरूप

अल्मोड़ा जनपद का अधिकांष क्षेत्र मध्य हिमालय क्षेत्र में स्थित है। इसका नाममात्र क्षेत्र शिवालिक श्रेणियों में आता है। यहाँ का धरातल अत्यधिक विशमताओं से युक्त है। इस क्षेत्र में बहने वाली नदियां रामगंगा, कोसी, गंगास तथा उनकी सहायक नदियों ने गहरी घाटियों का निर्माण किया है। फलस्वरूप

©SHARAD

कहीं हल्की ढ़ालयुक्त पहाड़ियॉ हैं तो कहीं गहरी घाटियों का निर्माण हुआ है। अल्मोड़ा जनपद हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित होने के कारण यहाँ के भौतिक भू–दृश्यों में विविधता मिलती है। यहाँ पर्वतीय भू–दृश्यों के रूप में श्रेणियाँ, कगार, कटक, घाटियाँ आदि में स्थित हैं। प्रदेश में उच्च कटकों के पार्श्वयुक्त चौड़ी घाटियां हैं तो दूसरी तरफ उच्च श्रेणियों से युक्त गहरे गार्जों की स्थिति है। इस प्रकार यहां मध्य हिमालयी प्रदश की सभी उच्चावचीय विशेषताएं हैं। यह क्षेत्र टर्शियरी युगीन नव–वलित पर्वत का ही अंग हैं जहाँ इंडियन प्लेट का यूरोपियन प्लेट के नीचे क्षेपण हो रहा है तथा पर्वतीकरण की क्रिया अब भी सक्रिय है।

उच्चावचीय आधार पर अल्मोड़ा जनपद में 510 मीटर से 2830 मी0 तक का विस्तृत क्षेत्र मिलता हैं। यहाँ पर सर्वाधिक ऊँचाई वाले क्षेत्र उत्तरी–पूर्वी भाग हैं जहाँ भरकोट, पाडंवखाल एवं जागेश्वर के क्षेत्र 2400 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले हैं। 600 मीटर से कम ऊँचाई के सुदूर दक्षिणी–पश्चिमी भाग में स्थित कोसी घाटी, के अतिसीमित क्षेत्र 4 प्रतिशत हैं जबकि 600–1200 मीटर के ऊँचाई मंडल का विस्तार 24 प्रतिशत भू–भाग पर है। 1200–1800 मीटर के ऊँचाई मण्डल यहां का प्रतिनिधि ऊँचाई वर्ग है जिसका विस्तार 55 प्रतिषत भू–भाग पर है जबकि 1800 मीटर से अधिक ऊँचाई के क्षेत्र 17 प्रतिषत भू–भाग पर विस्तृत हैं।

जनसंख्या वितरण

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का वर्तमान प्रतिरूप उस क्षेत्र में विभिन्न ऐतिहासिक कारकों में सक्रिय भौतिक, सांस्कृतिक एवं जनांकिकीय कारकों का प्रतिफल होता है। यद्यपि वर्तमान काल में प्राविधिक प्रतिजन्य औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण के कारण भौतिक कारकों के महत्व में कमी आयी है एवं सांस्कृतिक कारकों का महत्व बढ़ा है परन्तु भारत के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ की अर्थव्यवस्था कृशि पर निर्भर है, अभी भी भौतिक कारक जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व प्रतिरूप को नियंत्रित करते हैं।

जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को भौतिक कारक **(उच्चावच, ढाल, पानी के स्रोत की उपलब्धता, मिट्टी, तापमान)** मुख्य रूप से प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक एवं जनांकिकीय कारक भी जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करते हैं। जनपद के जिन क्षेत्रों में नदियों ने चौड़ी घाटियों का निर्माण किया है वहाँ घाटी में उपजाऊ मिट्टी मिलने एवं सिंचाई की सुविधा के कारण जनसंख्या जमाव अधिक मिलता है। चनांदा, सोमेष्वर न्याय पंचायतों में भी इसी कारण सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व मिलता है। गनाई, छाना एवं ठौनगाड भी ऐसी न्याय पंचायतें हैं जहाँ कृशि के विकास के फलस्वरूप उच्च जनसंख्या जमाव एवं संकेन्द्रण मिलता है। जनपद के जिन भू–भागों में अत्यधिक विरल उच्चावच तथा तीव्र ढाल युक्त सतहें हैं, वहां भू–स्खलन की अधिक सम्भावना, कृशि के लिए खेतों के लघु आकार, पानी के स्रोतों की कमी आदि के परिणामस्वरूप न्यून जनसंख्या का संकेन्द्रण पाया जाता हैं। अन्डोली, हयाड़ी, बिल्लेख डंगरा, महिग्यारी आदि न्याय पंचायत ऐसे क्षेत्र हैं जहां न्यून जनसंख्या वितरण एवं घनत्व मिलता है।

सारणी सं0 1 अल्मोड़ा जनपद की जनसंख्या प्रवृत्ति

वर्ष	जनसंख्या	प्रतिशत वृद्धि
1951	550550	–
1961	633407	+ 14.19
1971	472836	– 24.17
1981	560533	+ 18.55
1991	607241	+ 8.33
2001	630446	+ 3.82

स्रोतः भारतीय जनगणना हस्तपुस्तिका।

जनसंख्या के घनत्व को उच्चावच एवं तापमान ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। जहाँ ऊँचाई सामान्य से अधिक है वहाँ ऊँचाई पर तापमान घटकर हिमांक से भी नीचे होने के कारण शीतकाल में हिमांकित होता है तथा इसी कारण यहाँ जनसंख्या विरल है। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को सांस्कृतिक कारकों ने भी प्रभावित किया है जिनके परिणामस्वरूप ही नगरीय क्षेत्रों के आस–पास के क्षेत्र अधिक संकेन्द्रण एवं घनत्व के क्षेत्र हो गये हैं। नगरीय सुविधाओं के कारण ही पंतकोटली, खत्यारी एवं फलसीमा आदि न्याय पंचायतें उच्च जनसंख्या क्षेत्र हैं। इसके अतिरिक्त यातायात के साधनों की सुविधा, बेरोजगारी, प्रवास आदि अनेक जनांकिकीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करते हैं।

चित्र 1–अल्मोड़ा जनपद में जनसंख्या घनत्व

अल्मोड़ा जनपद में पिछले पचास सालों में जनसंख्या का स्तर लगभग स्थिर है। 1961–1971 में जनसंख्या प्रतिषत में भारी ह्रास (24.17 प्रतिशत) होने के कारण यह भरपाई 2001 की जनगणना तक हो पाई है। उत्तराखण्ड प्रदेश की जनसंख्या में 118.90 प्रतिशत वृद्धि हुई जबकि भारत की जनसंख्या में जो **वर्ष 1951** में 36.10 करोड़ थी तथा 2001 में 102.70 हुई थी पिछले पचास वर्शों में लगभग चार गुना वृद्धि हुई है।

सारणी सं0 2: अल्मोड़ा जनपद का संक्षिप्त विवरण

1.	सेवा केन्द्र	1. तहसील	9
		2. विकासखण्ड	11
		3. नगर समूह	4
		4. न्याय पंचायत	95
		5. ग्राम पंचायत	1122
		6. ग्रामीण मकानों की संख्या	238875
		7. नगरीय मकानों की संख्या	16131
		8. ग्रामीण खाली मकानों की संख्या	26091
		9. नगरीय खाली मकानों की संख्या	1228
2.	भूमि उपयोग (2005–2006)	1. कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	465858
		2. कृषि योग्य भूमि	42461
		3. ऊसर और खेती उपयोग भूमि	25647
		4. वनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल	236179
3.	कृषि कामगार श्रमिक	1. कृषक	146376
		2. कृषि श्रमिक	1185
		3. पारिवारिक उद्योग	2618
		4. अन्य कामगार	54476
4.	धर्म	1. हिन्दू	621203
		2. मुस्लिम	959
		3. सिख	492
		4. बौद्ध	185
		5. जैन	34
		6. अन्य अवर्णित धर्म	411

स्रोतः–साख्यिकी डायरी, (2007–2008) उत्तराखण्ड।

संसाधनों के अभाव के कारण अल्मोड़ा, जनपद की अधिकाश जनसंख्या कृशि कार्यो में लगी है परन्तु कृशि मानसून पर निर्भर होने के कारण गुणवत्ता का अभाव है। जिससे यहां अधिकांश लोग रोजगार के लिए **दिल्ली, देहरादून, मुम्बई, चण्डीगढ़** आदि क्षेत्रों के लिए स्थानान्तरण कर चुके हैं तथा कुछ लोग वहां स्थायी निवास भी बना चुके हैं। यहाँ पर अधिकांष लोग शिक्षित होने पर राजनीति तथा षिक्षा

क्षेत्र में भी अपना भाग्य आजमा रहे हैं, जिससे कि इन क्षेत्रों में पर्याप्त प्रतियोगिता होने लगी है। अधिकांश लोग हिन्दू होने के कारण यहाँ पर देवी देवता एवं रीति रिवाज हिन्दू धर्म के अनुसार ही प्रचलित हैं।

संसाधन और साक्षरता का घनिश्ठ सम्बन्ध होता है। जिस क्षेत्र में साक्षरता जितनी अधिक होगी उसकी संसाधन–उपयोगिता का उतना ही अधिक उपयोग होगा। वर्श 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ कुल साक्षरता 73.6 प्रतिशत है जिसमें पुरूश साक्षरता 90.15 प्रतिशत एवं स्त्री साक्षरता 61.43 प्रतिशत है जो जनसंख्या का उच्च संसाधनता का संकेतक है संसाधन के रूप में मानव की संख्या और श्रम शक्ति से भी बढ़कर उसकी बौद्धिक, प्रतिविधिक क्षमता, पर्यावरण परिज्ञान एवं सं साधनो के उपयोग सम्बन्धी निर्णय महत्वपूर्ण है। सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृश्टिकोण रोजगार के लिए यहाँ पुरूश जनसंख्या, विषेश रूप से युवा वर्ग के बाहर चले जाने के परिणाम स्वरूप कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत में कमी हुई है। जनपद में चार प्रकार के आय वर्ग के लोग सम्पन्न, मध्यम गरीब, निम्न, अति निम्न वर्ग लोग मिलतें हैं। अति निम्न वर्ग में अधिकांश लोग अनुसूचित जाति, जनजाति, धोबी, लुहार आदि वर्ग के हैं। इनका शैक्षणिक स्तर भी आर्थिक व सामाजिक स्तर के अनुरुप क्रमशः कम होता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप संसाधन उपयोग की क्षमता भी उसी क्रम में घटती जाती है।

उपलब्ध संसाधन

अल्मोड़ा जनपद की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृशि कार्य में लगी हुई है परन्तु पर्वतीय क्षेत्र, कठिन उच्चावच, तीव्रढ़ाल, जलप्राप्ति की सीमितता आदि के कारण यह आजीविका का मुख्य साधन नहीं हैं। नदी–घाटी क्षेत्रों में अवश्य उत्तम कृशि की जाती है। अतः जनपद में प्रमुख प्राकृतिक संसाधन के अन्तर्गत भूमि संसाधन हैं जिस पर सर्वाधिक क्षेत्र पर वनों का विस्तार है। यहाँ ऊँचाई के अनुसार वनस्पति प्रकार में मण्डलीयकरण मिलता है। जहाँ पर्वत पाद पर स्थित नदी घाटियों की उश्ण कटिबंधीय वनस्पति से लेकर उच्च पर्वतीय श्रेणियों पर शीतोश्ण कटिबंधीय वनस्पतियां मिलती है। कृशि कार्य के अन्तर्गत घाटी वाले क्षेत्रों में तथा उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में फलों एवं सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। फसलों के अन्तर्गत धान, गेंहू, जौ, दलहन, तिलहन तथा सब्जियों के अन्तर्गत आलू, मूली, शिमला मिर्च, लाल मिर्च, अरबी, फ्रासबीन आदि तथा घाटी के गर्म क्षेत्रों में आम तथा ठंडे क्षेत्रों में सेब, नाशपाती, आडू आदि का उत्पादन किया जाता है। जल संसाधन के अन्तर्गत् मुख्य रूप से कोसी, रामगंगा, गंगास बिनों आदि नदियां तथा कई छोटे–बड़े पर्वतीय नाले जिन्हें स्थानीय भाशा में गाड़ एवं गधेरा कहा जाता है, वर्तमान में हैं, जिनके माध्यम से उपयुक्त स्थानों में नहरें एवं गूलें निकालकर घाटी की तलहटी में सिंचाई तथा सीमित पैमाने पर मछली पालन का कार्य किया जाता है तथा सीमित स्तर पर विद्युत उत्पादन किया जाता है। खनिज संसाधन का लगभग इस क्षेत्र में अभाव है, खनिज संपदा के रूप में मैग्नेसाइट पत्थर की प्राप्ति सोमेश्वर घाटी, पालडीछीना, देवलधार आदि स्थानों पर होती है। इसके अतिरिक्त लाल मिट्टी का उपयोग घरों में दीवालों पर पुताई करने तथा खड़िया मिट्टी का उपयोग चूने के स्थान पर पुताई करने में किया जाता है जिनका खनन कार्य ग्रामीणों द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर किया जाता है।

मृदा संसाधन

मृदा एवं जलवायु ही प्रधानतः फसलों के वितरण, उत्पादन एवं उत्पादन के मौसम का निर्धारण करते हैं। उच्चावच एवं ऊँचाई में विविधता के कारण यहाँ मृदा प्रकारों में लंबवत् मंडलीकरण मिलता है। 1800 मीटर से अधिक ऊँचाई पर पॉडजाल मिट्टीयां, 1000 से 1800 मीटर की ऊँचाई के मध्य बादामी वन प्रदेशीय मिट्टियां, 600–1200 मीटर ऊँचाई के मध्य जलोढ मिट्टियों के खण्ड तथा 600 मीटर से कम ऊँचाई पर नदी घाटियों में जलोढ़ मिट्टियां मिलती है। पाडजाल, मिट्टियां ओक एवं उसकी अंतः वृद्धि के कारण ह्यूमस से सम्पन्न होती है तथा फल एवं आलू के उत्पादन हेतु सर्वोपयुक्त है। बादामी वन प्रदेशीय मिट्टी वाले क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेत बनाकर कृशि की जाती है क्योंकि जिस ऊँचाई पर यह मिलती है वहां फसलोत्पादन हेतु आदर्श जलवायु है। नदी घाटियों के ऊपरी भागों में बादामी एवं निचले भागों में जलोढ़ मिट्टियां मिलती है जिनमें पहाड़ी आलू, चावल एवं गेंहूं की कृशि की जाती है। कई स्थानों पर इनमें सब्जियां भी उगायी जाती है। इनके अतिरिक्त क्षेत्र का विस्तृत भू–भाग चट्टानी बंजर के रूप में है जो घाटियों के दोनों पार्श्वों पर स्थित है तथा मुख्यतः भेड़, बकरी चराने में प्रयुक्त होता है। यहां पर भूगर्भिक दृश्टि से चूना प्रधान, सिलिका प्रधान एवं रवेदार मिट्टियां मिलती है। कृशि की उपादेयता की दृश्टि से यहां की मिट्टियों को लाल दोमट, भूरी पाडजाल एवं घास प्रदेशीय मिट्टियों में वर्गीकृत करते हैं। वस्तुतः यहां नदी घाटियों की जलोढ़ मिट्टी को छोड़कर मिट्टियों के विभिन्न मंडलों का पूर्ण विकास नहीं हुआ है। तीव्र ढालों पर स्थित सीढ़ीदार खेतों की मिट्टियां मूसलाधार वर्शा होने पर प्रवाहित हो जाती है। वर्श 2005–06 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 465858 हेक्टेअर, वनों के अन्तर्गत 236179 हेक्टेयर, ऊसर और खेती के अयोग्य भूमि 25647 हेक्टेयर, खेती के अतिरिक्त अन्य उपयोग में आने वाली भूमि 12655 हेक्टेयर, कृशि योग्य बेकार भूमि लगभग 42461 हेक्टेयर भूमि उपलब्ध थी।

वन संसाधन

अल्मोड़ा जनपद में सम्पूर्ण क्षेत्रफल के 41.24 प्रतिशत क्षेत्र पर वनों का विस्तार है। यहाँ अनेक प्रकार के आर्थिक लाभ वाले पौधे मिलते हैं। वनों से औद्योगिक लकड़ी, कागज, एवं लुग्दी बनायी जाती है। यहाँ ऊँचाई के अनुसार वनस्पितियां परिवर्तित होती जाती है। 800 मीटर से कम ऊँचाई वाले क्षेत्र में उश्ण कटिबन्धीय वनस्पतियां आम, शीशम, बबूल, जामुन आदि तथा इससे ऊपर 800 से 1500 मीटर तक की ऊँचाई तक चीड़ के वृक्षों की प्रधानता मिलती है। 1500 मीटर से अधिक ऊँचाई पर क्रमशः ओक (बाँज), **रोडोडेन्ड्रॉन** एवम् देवदार के वृक्ष मिलते हैं। इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार की जड़ी–बूटियां इन वनों से प्राप्त होती है। विगत 30 वर्शों में यहाँ के वनों की सघनता में कमी आयी है जिसका प्रमुख कारण अग्नि, अनियमित शाखा कर्तन, घास काटना, ईंधन के लिए हरे वृक्षों को काटना, खेती की घेर बाढ़ के लिए लकड़ी काटना, बेलों को सहारा देने के लिए लकड़ी काटना, अत्यधिक लीसा विदोहन, अवैध वन कटाई तथा जलवायिक दशाओं में परिवर्तन है। समय–समय पर विभिन्न पौधालयों का निर्माण करके तथा वृक्षारोपण के माध्यम से वनों के क्षेत्रफल में वृद्धि के प्रयास किये जा रहे हैं।

जल संसाधन

जल है तो कल है, जिसके बिना जीवन संभव नहीं है। जल का उपयोग पेयजल के अतिरिक्त सिंचाई, विद्युत उत्पादन, मत्स्य पालन, परिवहन, उद्योग आदि में किया जाता है। कृशि के विकास एवं उसके स्तर निर्धारण में जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक तत्व है। यहां पर जल का मुख्य स्रोत वर्शा है, जो वर्शा काल में ही अधिक होती है। वर्शा से प्राप्त अधिकांश जल छोटे–छोटे नालों के माध्यम से नदियों तक पहुंचता है। कुछ जल भूमिगत हो जाता है जो कि कमजोर चट्टानी क्षेत्रों तथा कठोर एवं मुलायम चट्टान के बीच के रन्ध्रों से धरातल पर स्रोतों के माध्यम से बहता रहता है जिसका उपयोग ग्रामीण क्षेत्र के लोग पीने के लिए करते हैं। पानी के स्रोतों के निकट ही यहाँ मानव अधिवास मिलते हैं। जिस वर्श वर्शा कम होती है उस वर्श गर्मी में ये पानी के स्रोत या तो सूख जाते हैं या इनमें पानी की कमी हो जाती है जिसका सीधा प्रभाव वहां के लोगों पर पड़ता है। नदी घाटी वाले क्षेत्रों में छोटी–छोटी नहरों के माध्यम से सिंचाई का कार्य भी किया जाता है। प्रारम्भ में घाटी क्षेत्रों में पन आटा चक्की व्यवसाय लोगों द्वारा किया जाता था परन्तु अब इनमें कमी आ गयी है। वर्श 2005–06 में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 5018 हेक्टेअर था–नहर द्वारा 3178 हेक्टेअर तथा अन्य द्वारा 1840 हेक्टेयर। इस क्षेत्र में रामगंगा, गंगास एवं कोसी प्रमुख नदियां हैं। जिनका उद्गम उच्च पर्वतीय क्षेत्रों से होने के कारण इनमें वर्श भर जल भरा रहता है किन्तु वर्शा काल में ही जल की अधिकता रहती है।

खनिज एवं पशु संसाधन

आधुनिक यंत्रीकरण एवं उद्योग प्रधान युग में खनिज किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। परन्तु अध्ययन क्षेत्र , खनिजों की दृश्टि से लगभग निर्धन है। अल्प मात्रा में मैग्नेसाइट मिलता है। खनिज के नाम पर ग्रामीण निवासी मकान बनाने के लिए पत्थरों का खनन करते हैं। विशम भौगोलिक परिस्थिति के कारण कृशि कार्य के लिए बैल एक प्रमुख पशु संसाधन के रूप में है। इसके अतिरिक्त दुधारू पशुओं में गाय एवं भैंस, ऊन एवं मांस के लिए बकरी, भेड़, मुर्गी आदि पाले जाते हैं तथा सामान ढ़ोने के लिए खच्चरों को पाला जाता है।

उद्योग

विश्व के वे राश्ट्र जहां औद्योगीकरण अधिक हुआ है वहां आर्थिक समृद्धि अधिक पायी जाती है तथा जिन राश्ट्रों में औद्योगीकरण नहीं हुआ है अथवा कम हुआ है, वे निर्धनता, पिछड़ेपन, निम्न आय तथा निम्न जीवन स्तर से ग्रस्त हैं। आर्थिक सम्प्रभुता के लिए औद्योगीकरण अनिवार्य तत्व है। औद्योगीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी भी क्षेत्र में उद्योगों का क्रमिक विकास होता है। उद्योगों के माध्यम से प्राथमिक व्यवसायों से प्राप्त कच्चे मालों का परिश्करण कर विभिन्न जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। औद्योगीकरण जहां एक तरफ क्षेत्र के आर्थिक विकास से संबंधित होता है, वहीं दूसरी तरफ जनसंख्या

वृद्धि, वितरण एवं संकेन्द्रण, प्रजनन, आयु एवं लिंग संरचना का प्रधान नियंत्रक होता है। उद्योग मुख्यतः विकासशील अर्थव्यवस्था को विकसित अर्थव्यवस्था की तरफ ले जाने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करते हैं।

अल्मोड़ा जनपद औद्योगिक दृश्टि से एक पिछड़ा क्षेत्र है जहां पर खनिज संसाधनों का अभाव मिलता है। साथ ही उच्चावच विशम है तथा जलवायविक विविधता है, ढ़ालतीव्र हैं, जल प्राप्ति में कठिनाई है तथा यातायात के साधन अविकसित हैं। अतः, यहां पाये जाने वाले प्रमुख उद्योगों में वन संसाधन पर आधारित उद्योग आरा मिल, काश्ठ फर्नीचर, विरोजावार्निश एवं तारपीन तेल बनाने की इकाईया प्रमुख हैं। चीड़, देवदार एवं तुन नामक वृक्ष की लकड़ी इमारती लकड़ी के रूप में प्रयुक्त की जाती है। चीड़ के पेड़ से निकलने वाले लीसे से विरोजा वार्निश तथा तारपीन तेल बनाया जाता है। ओक (बांज) के वृक्ष की लकड़ी से कृशि के उपकरण हल, दनेला, कुदाल, दरांती के हत्थे आदि बनाये जाते हैं। मधुमक्खी पालन के बक्से का निर्माण तुन की लकड़ी से ही किया जाता है। विरोजावार्निश एवं तारपीन के तेल निर्माण की इकाइयां मुख्य रूप से लमगड़ा, धौलादेवी, भैंसियाछाना, हवालबाग विकास प्रखण्डों में स्थापित है। दवा बनाने की इकाईयां गनियाद्योली, रानीखेत, आल्प्स फार्मास्यूटिकल लिमिटेड, पातालदेवी अल्मोड़ा एवं मोहान में यूनानी एवं आर्युर्वेदिक दवा बनाने की इकाई स्थापित है। कृशि पर आधारित आटा चक्की, मसाला चक्की, तेलध ानी, बिस्कुट, बेकरी, नमकीन, फ्रूट जूस, जल संरक्षण इकाईयां एवं पशुओं पर आधारित डेरी एवं चर्म उद्योग आदि से संबंधित इकाईयां अल्मोड़ा, रानीखेत, द्वारहाट, आदि में स्थापित हैं। इनके अतिरिक्त कालीन उद्योग, तांबा, बर्तन बनाने के उद्योग, मोमबत्ती, अगरबत्ती बनाने की इकाईयां विशेश रूप से जनपद के पूर्वी क्षेत्र में छोटे पैमाने पर स्थापित हैं। अल्मोड़ा जनपद में मार्च 2008 तक संयुक्त स्कन्ध कम्पनीयों की संख्या 28 थी, जबकि निकटतम जनपद नैनीताल में यह संख्या 434 है। वर्श 2005 में अल्मोड़ा जनपद में ग्रामीण क्षेत्र में सभी उद्योगों की संख्या 21384 तथा नगरीय क्षेत्र में 4195 थी। खादी उद्योग की एक ईकाई की स्थापना चनौदा में गांधी आश्रम के द्वारा की गयी है। जहां पर उन से संबंधित विभिन्न प्रकार के सामान तैयार किये जाते हैं। यह इकाई अपने ऊनी चादर (पंखी) के लिए प्रसिद्ध ह।

पर्यटन

सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव की चेतना में इस बात के लिए हमेशा जिज्ञासा रही है कि उसके देश के अन्दर दर्शनीय स्थल कौन–कौन से हैं। इन दर्शनीय स्थलों का निर्धारण विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जाता है। कभी ये दर्शनीय स्थल महत्वपूर्ण तीर्थों के रूप में जाने जाते रहे और कभी ये प्रसिद्ध देवी–देवताओं से संबंधित रहे। प्रकृति की मनोहारी छटा एवं भौगोलिक परिवेश ने भी दर्शनीय स्थलों की संख्या में वृद्धि की है। ऊँची–ऊँची पर्वत चोटियों तथा ग्लेशियरों ने मानव मन को मोहित किया है तथा अपने प्रति इतना आकृष्ट किया है कि विभिन्न कठिनाईयों को झेलते हुए भी व्यक्ति दूरस्थ स्थलों पर जाकर ही अपनी उत्सुकता को शान्त कर पाया हैं। ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति, व्यक्ति समूह या समाज का एक बड़ा घटक इन स्थानों को देखने के लिए जाता है तो निश्चित रूप से उनके इस आवागमन से सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्रिया–कलापों का उदय एवं जन्म होता है।

सारणी सं0 3: अल्मोड़ा जनपद में पर्यटकों का आवागमन

	अल्मोड़ा		रानीखेत	
वर्ष	भारतीय	विदेशी	भारतीय	विदेशी
2006	81314	5225	76261	873
2007	88965	5131	77517	506
2008	93615	4821	80105	448

स्रोत : पर्यटन विभाग, देहरादून।

यह क्षेत्र प्रारम्भ से ही धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। विभिन्न देवस्थल, देवमन्दिर, बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि स्थलों में जाने वालों का मार्ग इस क्षेत्र से ही जा रहा है। उत्तम जलवायु के कारण जनपद के रानीखेत को अंग्रेजो ने अपनी सैनिक छावनी के रूप में विकसित किया जो वर्तमान में भी देषी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना है। इसके अतिरिक्त अल्मोडा, जागेश्वर, चौबटिया गार्डन, मानिला, कालिका स्टेट, दूनागिरी, द्वाराहाट, विन्सर, सोमेश्वर आदि पर्यटकों को आकर्षित करने वाले प्रमुख केन्द्र हैं। वर्श 2008 में अल्मोडा जनपद में 98.43 हजार तथा रानीखेत में 80.55 हजार पर्यटक अल्मोड़ा जनपद में प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेने पहुंचे।

निश्कर्श

अल्मोडा जनपद का अधिकांश भू–भाग मध्य हिमालय में स्थित होने के कारण यहाँ का भू आकृतिक स्वरूप पहाडी ढालों से युक्त ऊबड़–खाबड से भरा पड़ा है। संसाधनों की कमी के कारण उच्च साक्षरता दर होते हुए भी अत्यधिक प्रवास हो रहा है। मुख्य संसाधन कृषि, वन, पर्यटन, लघु उद्योगों से ही लोग अपनी जीविका का निर्वहन कर रहे है। यहाँ पर संसाधन उपलब्धता पर आधरित व्यावसायिक षिक्षा देने की आवश्यकता है जिससे रोजगार के लिए क्षेत्र से बाहर जाने वाले युवा वर्ग में कमी आयेगी जिससे संसाधनों का सुव्यवस्थित विकास एवं क्षेत्र का विकास अधिक होगा। स्थानीय रूप से प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर लघु व कुटीर उद्योग को बढ़ावा देकर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। साथ ही वन सम्पदा व प्राकृतिक जीव–जन्तुओं का संरक्षण कर पर्यटन जैसे महत्वपूर्ण उद्योग का आशातीत विकास किया जा सकता है। उपरोक्त सभी प्रयासों से शिक्षित व अशिक्षित, कुशल व अर्धकुशल वर्ग के पलायन को बहुत हद तक रोका जा सकता है। जिससे क्षेत्र का न सिर्फ क्रमिक विकास होगा अपितु आर्थिक सम्प्रभुता का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

संदर्भ

1.चन्द्रशेखर, ए0 1968, भारत की जनसंख्याः तथ्य, समस्या, नीति, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश।
2.पन्त, जे0 सी0, 1983 जनांकिकी, गोयल पब्लिकेसन हाऊस, सुभाषनगर, मेरठ।
3.सपरू आर0 के0, 1990 भारत मे पर्यावरण योजना एवं प्रबंधन, आशिष पब्लिकेशन हाऊस,नई दिल्ली।
4.सिंह सविन्द्र, 2000, भूआकृतिक विज्ञान, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश।
5.मामोरिया चतुर्भुज एवं शर्मा वी0 एल0,1990, संसाधन भूगोल, साहित्य भवन, आगरा।
6.सांख्यिकी डायरी, 2007–2008, अर्थ एवं संख्या निदेशालय, नियोजन विभाग, उत्तराखण्ड शासन, देहरादून।
7.वार्षिक आख्या, 2008, पर्यटन विभाग, देहरादून,